अरब देशों में आन्दोलन क्यों, कैसे और कहां?

दिनांक 05.04.2012 को दिल्ली में सुश्री तवक्कुल करमन द्वारा दिया गया 5वां बाबू जगजीवन राम स्मृति व्याख्यान।

प्रिय भाइयो और बहनो,

आपको शांति मिले।

मैं, सबसे पहले नई दिल्ली, भारत की राजधानी, विश्व में सबसे बड़े लोकतंत्र और विविधता तथा बहुलवाद के एक सबसे प्राचीन और समृद्धि देश में होने पर गर्व और अत्यधिक प्रसन्नता व्यक्त करती हूं।

मुझे गर्व है कि मैं, महात्मा गांधी के देश में हूं जिन्होंने शांतिपूर्ण संघर्ष की ओर प्रेरित किया था और आप परिवर्तन और सुधार के लिए अहिंसक संघर्ष के कार्यक्रम के प्रणेता हैं। मैं, महात्मा गांधी की आत्मा को अरब मूल के युवाओं के सलाम का पैगाम देती हूं जो उनके उत्साह और संघर्ष द्वारा प्रेरित हुए और अब वे अपनी शांतिपूर्ण क्रांति चला रहे हैं जिसने संपूर्ण विश्व को झकझोर दिया है।

मुझे गर्व है कि मैं, नेहरू और इंदिरा गांधी के देश में हूं।

मुझे फक्र है कि हम अपने मानव इतिहास में से महान नेताओं एक महान महिला अधिकारों के जनक बाबू जगजीवन राम जी की जयंती मना रहे हैं।

मुझे यह कहने की इजाजत दें कि हम न केवल भारत के अहिंसा आन्दोलन के जनक महात्मा गांधी और उनकी शांति प्रिय आत्मा से प्रेरणा प्राप्त कर रहे हैं बल्कि हम, इसकी विविधा और बहुलवादिता तथा इसके सहयोगी, समेकित, सहभागी, सह-अस्तित्व से भी प्रेरणा प्राप्त कर रहे हैं।

प्रिय बहनो और भाइयो

वफादारी का कर्तव्य हमें वह पूरा करने का आदेश देता है जिसकी शुरूआत मानवता के महान नेता महात्मा गांधी द्वारा की गई थी। मैं, भारतीय राष्ट्र के इसके सभी घटकों, जनता और निजी संस्थाओं तथा इसके असरदार तबकों के बौद्धिक, राजनीतिक तथा मीडिया क्षेत्रों के सतत योगदान और निम्न जाति के लोगों द्वारा सहन किए गए भेदभाव के सभी रूपों को समूल नष्ट करने के प्रयासों का आह्वाहन करती हूं। मैं भारत का, महात्मा गांधी के सिद्धांतों पर अहिंसक

और अरब मूल के देशों द्वारा शांतिपूर्वक संघर्षों का समर्थन करके विशेष रूप से उनका जो तानाशाह को गिराने के लिए लड़े जा रहे हैं, पर लौटने का भी आह्वाहन करती हूं। इन आन्दोलनों में आजादी और सम्मान की ललक रखने वाले हजारों शांतिप्रिय युवाओं ने भाग लिया है। मैं, उन सभी का वार्ता के लिए अरब लीग के आह्वाहन को बशर अल हसद के शासन पर दबाव डालने के लिए मानने के लिए तथा परिवर्तन के लिए वहां के लोगों की न्यायोचित मांगों का उत्तर देने के लिए अंतर्राष्ट्रीय प्रयासों का समर्थन करने का आह्वाहन करती हूं।

प्रिय मित्रो,

यह दलील दी जा सकती है कि अरब देशों की क्रांतियां, मौजूदा और भावी, अरब युवाओं की राज्य की समान नागरिकता के लिए तात्कालिक आवश्यकता के प्रत्युत्तर में आयी हैं और आएंगी जिसमें वे आजादी, सम्मान और बिना किसी भेदभाव के समान अधिकार पाऐंगे।

यह स्पष्ट है कि अरब मूल के देशों की एक समान अवधारणा है कि नागरिकों का सम्मान नहीं है, उनकी आजादी गायब है, उनके अधिकार शासकों और तानाशाहों द्वारा रौंदे जाते हैं जिन्होंने देश को अपने निरंकुश शासन के लम्बे दशकों के दौरान राष्ट्रपति और उसके परिवार का मात्र खेत अथवा निजी व्यवसाय बना दिया है। दुर्भाग्यवश, वह और उसका परिवार राज्य संपत्ति को फिजूल खर्ची, अविवेकी और अनुचित इसके विपरीत क्या हममें से कोई भी अपनी व्यक्तिगत संपत्तियों के संबंध में करेंगे, बर्बाद किया है!!

अरब देशों में क्रांतियों द्वारा गिराए गए शासनों और गिरने वाले शासनों में सामान्य सार तथ्य यह है कि राष्ट्रपति दशकों के लिए राष्ट्रपति रहता है और सभी निर्णय करने की शक्तियों तथा सत्ता का नियंत्रण उसके परिवार में निहित रहता है और उनके अपने-आपको 'प्रजातंत्रिक देश' कहने के बावजूद तथा उनके संविधान में यह उल्लेख होने के बावजूद कि संप्रभुता लोगों के पास है और कि लोग शक्ति के वास्तविक मालिक हैं किन्तु हम जन्में थे और हम रहते थे और प्रतीत हुआ कि हम मर जाएंगे किन्तु बशर और उसका परिवार, अली सालेह और उसका परिवार, मुबारक और उसका परिवार, बैन अली और गद्दाफी सदैव सत्ता में रहेंगे और जब तक कि हम यह कहते रहेंगे कि वे कभी नहीं मरेंगे!!!

मैं विश्वास के साथ यह भी कह सकती हूं कि हमारी शांतिपूर्ण क्रांतियां जो एक पौराणिक साहस और नैतिक प्रतिबद्धता के साथ आरम्भ हुई हैं, जो सभी अरब देशों में राज्य के भाई भतीजावाद, रिश्वतखोरी, अन्यायपूर्ण शासन तथा स्वयं शासक और उसके परिवार के लिए शक्ति के पूर्ण दुरुपयोग और दोहन के परिणामस्वरूप हमारी हताशा से उत्पन्न हुई हैं।

क्रांतियां तात्क़ालिक आंतरिक प्रतिक्रिया के कारण आयी हैं न कि बाहरी आदेशों के परिणामस्वरूप। वे न केवल अंतर्राष्ट्रीय तथा क्षेत्रीय षड़यंत्रों और दुर्भावनाओं जैसा कि शासन के अवशेषों और उनके भाई-भतीजावाद के नेटवर्कों तथा उनके अंतर्राष्ट्रीय प्रस्तावों को, जो अरब देशों के आन्दोलनों से भयभीत हैं जिन्हें विश्व के किसी भी भाग में दोहराया जा सकता है, जहां युवा पृथक्करण, दमन और उपेक्षा के शिकार हैं जैसा दावा किया जाता है, के परिणामस्वरूप आयी हैं।

अरब युवा ऐसे समय अपनी शांतिपूर्वक क्रांति लाए हैं जब सभी परम्परागत दलों और ताकतों के बीच निराशा का अत्यधिक बोलबाला था। उनका मानना था कि परिवर्तन कभी नहीं होंगे और लोगों में परिवर्तन लाने की मांग और इसके लिए बलिदान देने का साहस और इच्छा शक्ति नहीं थी तथा सबसे अहम उनका सपना भी नहीं था। उनके पास बेहतर भविष्य के लिए आकांक्षाएं भी नहीं थी जिनमें उनकी आजादियां संरक्षित हों और मानवीय सम्मान का आदर और अक्षुण्यता बनी रहे।

सभी लोगों के दिलों में यह दृढ़ विश्वास था कि शासक सत्ता, शांतिपूर्वक अथवा हिंसा द्वारा परिवर्तन के लिए किन्हीं मांगों को कुचलने की उनकी क्षमता के कारण मजबूत थे और कि शासकों के पास ऐसी चुनौतियों का सामना करने के लिए सुरक्षा और पूर्णरूप से प्रशिक्षित और हथियारों से लैस सैनिक तंत्र था और जनता की मांगों, जिनके लिए शासक सावधानियां बरतता था और दशकों भर पर्याप्त तैयारियां करता था। शासक लोगों को अपने अधिकार प्राप्त करने से तथा सम्मानजनक जीवन और समान नागरिकता के लिए उनकी मांगों को पूरा करने से रोकने के लिए अपनी इच्छा से सभी संसाधनों का उपयोग करता था।

जिन देशों का यह विश्वास है कि सुधार बाहर से लाए जा सकते हैं और जिनके पास निरंकुश शासनों पर प्रजातंत्र और मानवाधिकारों के थोपने का एजेंडा है और वे देश जो यह भी विश्वास करते हैं कि बाहर से थोपे गए सुधार अव्यवहारिक विचार है और यह अत्यधिक रूप से खर्चीला तथा एक असफल विचार है। इस समय, इसे पुनः दोहराने की आवश्यकता नहीं है चूंकि यह सद्धाम हुसैन शासन में घटित हो चुका है। इस संबंध में यह विश्वास था कि सद्धाम हुसैन का शासन सीमाओं के बाहर से मिसाइलों द्वारा गिराया गया अंतिम शासनों में से एक था और जिसे उसके लोगों द्वारा तथा उनके संघर्षों और बलिदानों द्वारा नहीं गिराया गया था।

यह स्पष्ट था कि वे शासन, भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों से, बाहरी संरक्षण और सहयोग प्राप्त थे और बाहरी ताक़तें उन्हें हटाना नहीं चाहती थी ..... या तो इस कारण कि वे उस अपरिचित और अपरीक्षित शासन से आशंकित थे कि अथवा इस कारण कि वे बलपूर्वक परिवर्तन लाने और प्रजातंत्र थोपने में अक्षम्य थे या उनके इस विश्वास के कारण की शासन एक कमजोर अथवा प्रतिपक्ष विहीन सत्ता की तुलना में पर्याप्त मजबूत थे।